फ्रांसिस्को गोया (Francisco Goya)

Francisco José de Goya y Lucientes, जिन्हें वश्व कला इतिहास में (फ्रां सस्को गोया) Francisco Goya के नाम से जाना जाता है, स्पेन के सबसे प्रभावशाली और गूढ़ कलाकारों में से एक थे। उनका जीवन और कार्य केवल चत्रकला की सीमाओं तक नहीं रुका, बल्कि उन्होंने सामाजिक यथार्थ, युद्ध की भयावहता, धा र्मक पाखंड, और मानवीय त्रासदी को अपनी कला के माध्यम से उजागर कया। **गोया** को अक्सर आधुनिक चत्रकला का जनक **(Father of Modern Art)** कहा जाता है, क्यों क उन्होंने उस समय के सामाजिक और राजनीतिक संकटों को जितनी निर्भीकता और आत्मिक गहराई से चत्रित कया, वह उनके युग के कसी अन्य कलाकार में दुर्लभ था।

उनका जन्म 30 मार्च 1746 को **Fuendetodos**, Aragon, Spain में हुआ था। बचपन में वे Zaragoza में पले-बढ़े और वहीं उन्होंने अपनी प्रारं भक कला शक्षा प्राप्त की। Goya का जीवन दो वपरीत ध्रुवों के मध्य झूलता रहा — प्रारं भक यश और दरबारी प्रतिष्ठा, और बाद में गहरी सामाजिक निराशा तथा व्यक्तिगत पीड़ा, जिसने उनकी कला को एक अभूतपूर्व आत्म चंतन की दिशा दी।

प्रारं भक जीवन

गोया ने अपनी कला का प्रारंभ धा र्मक चत्रों और रॉयल टैपेस्ट्री डज़ाइनों से कया, जिनमें उत्सव, ग्रामीण जीवन, और सौम्य सामाजिक श्यों को दर्शाया गया था। उनके ये प्रारं भक चत्र हल्के, रंगीन और शास्त्रीय प्रभावों से युक्त थे। धीरे-धीरे उन्होंने Madrid में अपनी जगह बनाई और 1786 में उन्हें **Court Painter to Charles III** बनाया गया। उनके द्वारा बनाए गए राजपरिवार के चत्र जैसे **"Charles IV of Spain and His Family"** (1800) बहुत च र्चत रहे। इस चत्र में वे शाही परिवार की भव्यता के पीछे छिपी कृत्रिमता को चुपचाप उजागर करते हैं। **गोया** स्वयं इस चत्र में बाईं ओर खड़े कलाकार के रूप में उपस्थित हैं, यह संकेत देने के लए क वे इस सत्ता संरचना के बाहरी पर्यवेक्षक भी हैं।

उनकी तकनीक में ब्रश की गति, रंगों की पारद र्शता, और पात्रों की मनोवैज्ञानिक उपस्थिति स्पष्ट झलकती है। वे केवल चेहरों को नहीं, व्यक्तित्व को चत्रित करते थे।

1793 में वे एक गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो गए, जिसके बाद वे स्थायी रूप से बहरे **(deaf)** हो गए। यह शारीरिक संकट उनके व्यक्तित्व और कला में निर्णायक बदलाव का कारण बना। वे आंतरिक रूप से अ धक अकेले, चंतनशील और आलोचनात्मक हो गए। अब उनकी कला एक आंतरिक वद्रोह और सामाजिक व्यंग्य का माध्यम बन गई। इसी काल में उन्होंने **"Los**

Caprichos" नामक 80 चत्रों की श्रृंखला प्रका शत की, जिसमें उन्होंने समाज की मूर्खताओं, धा र्मक पाखंड, नैतिक पतन और अंध वश्वास पर तीखा व्यंग्य कया।

इस श्रृंखला का सबसे प्र सद्ध चत्र है **"The Sleep of Reason Produces Monsters"** जिसमें एक व्यक्ति सर झुकाए सो रहा है, और उसके चारों ओर चमगादड़ और राक्षसी आकृतियाँ मंडरा रही हैं। यह चत्र उनकी चेतावनी है क जब ववेक सो जाता है, तब अंधकारमय शक्तियाँ प्रकट होती हैं।

"The Disasters of War"

गोया के जीवन का सबसे भयावह अनुभव **Peninsular War** था, जिसमें Napoleonic सेनाओं ने स्पेन पर आक्रमण कया और व्यापक हिंसा की। इस युद्ध ने Goya को भीतर से झकझोर दिया। उन्होंने 82 चत्रों की श्रृंखला **"The Disasters of War"** (1810–1820) बनाई, जो आज भी युद्ध की क्रूरता, मानवीय पीड़ा और सत्ता की हिंसा का सबसे यथार्थ चत्रण मानी जाती है। इन चत्रों में नायकों का अभाव है; केवल यातना, भूख, हत्या और भयावह सन्नाटा है।

इस श्रृंखला के एक चत्र में लखा है – **"Yo lo vi"** (I saw this) — Goya का यह वाक्य चत्रकला को साक्षी बना देता है। वे इतिहासकार नहीं थे, बल्कि एक ऐसे चश्मदीद गवाह थे जिन्होंने अत्याचारों को देखा और उन्हें अमर बना दिया।

The Third of May 1808

गोया की सबसे प्र सद्ध पेंटिंग **"The Third of May 1808"** (1814) में उन्होंने एक ऐसे क्षण को चत्रित कया है, जब फ्रांसीसी सैनिकों ने स्पेनिश नागरिकों को गोली से मार डाला। चत्र में एक व्यक्ति अपनी बाँहें ईसा मसीह की मुद्रा में फैलाए खड़ा है, उसके चेहरे पर भय, करुणा और आत्मब लदान की छाया है। यह चत्र धर्म, न्याय और प्रतिरोध का श्यात्मक घोषणापत्र बन गया। यहाँ प्रकाश, अंधकार और रचना का संयोजन केवल सौंदर्य नहीं, नैतिक संवेग बन जाता है।

"Black Paintings"

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में वे Madrid के पास एक एकांत मकान में रहने लगे, जिसे उन्होंने **Quinta del Sordo (House of the Deaf Man)** नाम दिया। यहाँ उन्होंने अपने घर की दीवारों पर जो चत्र बनाए, वे कला इतिहास में **"Black Paintings"** के नाम से प्र सद्ध हैं। ये चत्र गहरे, भयावह, और लगभग दुःस्वप्नात्मक हैं।

इनमें सबसे कुख्यात चत्र है **“Saturn Devouring His Son”**, जिसमें शनि अपने पुत्र को खा रहा है। यह चत्र क्रूरता, भय और जीवन के वनाशकारी पक्ष का रूपक है। Goya की यह श्रृंखला आत्मा की अंधी गुफाओं में झाँकने का साह सक प्रयास है। वे अब केवल समाज का नहीं, अपने भीतर के अंधकार का भी चत्रण कर रहे थे।

उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष **Bordeaux, France** में बिताए, जहाँ वे 1828 में निधन को प्राप्त हुए। वे चुपचाप चले गए, परंतु उनकी कला ने जो प्रतिरोध, जो प्रश्न, और जो आत्मिक खोज शुरू की थी, वह आज तक जारी है।

उनकी वरासत असाधारण है। वे न केवल स्पेन के, बल्कि आधुनिक वश्व के पहले कलाकारों में हैं जिन्होंने सत्ता के वरुद्ध, पाखंड के वरुद्ध, और जीवन के भीतर के अंधकार के वरुद्ध रंगों को आवाज़ दी। **Édouard Manet**, **Pablo Picasso**, **Otto Dix**, और **Francis Bacon** जैसे अनेक कलाकारों ने Goya को अपना मार्गदर्शक माना।

गोया की चत्रकला केवल श्य नहीं, चेतना की दस्तावेज़ है। वे कला को सौंदर्य की सीमा से बाहर ले आए और उसे मानव अनुभव के सबसे कठिन प्रश्नों से जोड़ दिया। वे हमें सखाते हैं क कलाकार केवल सुंदरता का चत्रकार नहीं, सच का साक्षी और अंधकार का अन्वेषक भी हो सकता है। उनकी कला, चाहे वह Caprichos हो, Disasters of War हो, या Black Paintings — हर जगह हमें वह सच्चाई मलती है जो आँखों से नहीं, आत्मा से देखी जाती है।